विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ ,लक्खीसराय

वर्ग-नवम

विषय -हिन्दी

आपको आज की कक्षा पर आधारित सामग्री दी जा रही है ,जिसे आप अपनी कांपी में लिखें और ध्यानपूर्वक पढ़ें ।

यमक अलंकार के उदाहरण -

जैसे- कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।

या खाए बौराय जग, वा पाए बौराय।।

उपर्युक्त लिखे उदाहरण में कनक शब्द दो बार आया है और दोनों ही बार उसका अर्थ भिन्न है एक कनक का अर्थ - सोना, तथा दूसरे कनक का अर्थ - धतूरा है। इस प्रकार एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये और उसका अर्थ हर बार भिन्न हो वहां यमक अलंकार होता है।

जिस प्रकार अनुप्रास अलंकार में एक ही वर्ण बार-बार आता है उसी प्रकार यमक अलंकार में भी एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आता है और इस प्रकार विशिष्ट शब्दों के प्रयोग के कारण काव्य की शोभा बढ़ जाती है।

सपना सपना समझकर भूल न जाना (यहाँ एक सपना शब्द का अर्थ - किसी का नाम, तथा दूसरे सपना शब्द का अर्थ - रात में आने वाला स्वप्न)

तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है। (तीन बेर - तीन बेर के दाने, तीन बेर - तीन बार)

माला फेरत जुग भया, मिटा ना मनका फेर, कर का मनका डारि के मन का मनका फेर।। (मनका - माला का दाना, मन का - हृदय का)

कहै कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लानी। (बेनी - कवि, बेनी - चोटी)

रति-रति शोभा सब रति के सरीर की (रति-रति - जरा सी, रति - कामदेव की पत्नी)

भजन कहयौ ताते भज्यौ, भज्यौ न एको बार (भज्यौ - भजन किया, भज्यौ - भाग किया)

सजना है मुझे सजना के लिए (एक सजना का अर्थ - श्रृंगार करना, दूसरे सजना का अर्थ - प्रियतम, प्रेमी, पति)

दीरघ साँस न लेइ दुख, सुख साँई मति भूल, दई दई क्यों करत हैं, दई दई सु कबूल।।

काली घटा का घमंड घटा

जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे

हरि हरि रूप दियो नारद को

जिसकी समानता किसी ने कभी पायी नहीं, पायी के नहीं अब वे ही लाल माई के।